बरेली जनपद के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यान्ह भोजन योजना का शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

अमन कृष्ण
एम.एड.,
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

साराँश
शोध अध्ययन का उददेश्य प्राथमिक विद्यालयों में सरकार द्वारा मध्यान्ह भोजन योजना का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्ध का अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के पाँच विकासखण्डों में संचालित प्राथमिक विद्यालयों में से प्रत्येक विकासखण्ड में संचालित प्राथमिक विद्यालयों में से प्रत्येक विकासखण्ड के 02–02 विद्यालयों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया है तथा प्रत्येक विद्यालयों में 10 विद्यार्थियों जिसमें (5 बालक, 5 बालिका) का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श के आधार पर किया गया है। प्रदत्तों का संकलन के लिए डॉ0 ए0के0 सिंह तथा ए0सेन0 गुप्ता द्वारा निर्मित सामान्य शैक्षिक उपलिब्ध परीक्षण (GACT-SG) तथा स्वनिर्मित मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

मूलशब्द : *प्राथमिक विद्यालय, मध्यान्ह भोजन योजन*

1.प्रस्तावना

मानव जीवन की मानव सभ्यता के आरम्भ से ही तीन महत्वपूर्ण आवश्यकताएं रही हैं–रोटी, कपड़ा और मकान। इन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में सबसे आवश्यक रोटी और कपड़ा है। भोजन की आवश्यकता के लिए मनुष्य ने प्रारम्भ से ही बहुत कुछ कार्य किये हैं। देश के अधिकांश बच्चे अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालयों में ही ग्रहण करते हैं। एक सर्वे से पता चला है कि बालक प्रातःकाल लगभग 60 प्रतिशत बिना भोजन किये हुए ही विद्यालय चले जाते हैं तथा अपने घर की जिम्मेदारी के कारण पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देते हैं। भोजन की इसी आवश्यकता को देखते हुए विभिन्न राज्यों की सरकारों ने विद्यार्थियों के लिए प्राथमिक स्तर पर मध्यान्ह भोजन योजना की शुरूआत की। जिससे कि बालक को पढ़ाई के साथ–साथ भोजन भी सरकार के द्वारा निःशुल्क दिया गया।

2.अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किसी भी शोध कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उसकी आवश्यकता एवं महत्व को जानना अत्यन्त आवश्यक है। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्राथमिक शिक्षा में पोषण सहायता का राष्ट्रीय कार्यक्रम 15 अगस्त, 1995 को तमिलनाडु से प्रारम्भ किया गया था, जिसके अन्तर्गत 6 वर्ष से लेकर 14 वर्ष के प्राथमिक विद्यालयों में पंजीकृत विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में सुधार तथा मानसिक स्तर को बढ़ाने के लिए मध्यान्ह भोजन को निःशुल्क उपलब्ध कराना था। यह भारत सरकार की अत्यन्त महत्वकांक्षी योजना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया

गया कि प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कितना प्रभाव है।

3.समस्या कथन

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा **''बरेली जनपद के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यान्ह भोजन योजना का भौक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''।**

4.शोध के उददे्श्य

शोध में निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गए है–

1.प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करना।
2.मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता, पौष्टितकता, वितरण, व्यवस्था निर्धारित मानकों के अनुसार प्रदान किये जाने का अध्ययन करना।
3.प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का प्रभाव का अध्ययन करना।

5. शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1.प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यान्ह भोजन योजना का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।
2.प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
3.प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

6.शोध अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध को निम्नानुसार परिसीमित किया गया है–

1.क्षेत्र परिसीमन :–प्रस्तुत शोध उ.प्र. राज्य के केवल बरेली जिले तक ही सीमित है।
2.समिष्ट परिसीमन :–प्रस्तुत शोध में उ.प्र. राज्य के बरेली जिले में संचालित सरकारी एवं अनुदान प्राप्त प्राथमिक विद्यालय अध्ययन के समिष्ट होंगे।
3.न्यादर्श परिसीमन–न्यादर्श के रूप में 10 प्राथमिक विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का जिसमें (50 छात्र व 50 छात्रा) यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

7.तकनीकी भाब्दों का अर्थ

शोध समस्या में अब तकनीकी शब्दों का अर्थ निम्न प्रकार से है–

1. **मध्यान्ह भोजन योजना** :–सरकारी तथा अनुदान प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों में सरकार द्वारा दोपहर में विद्यार्थियों की जो पका–पकाया भोजन उपलब्ध कराया जाता है उसे ही मध्यान्ह भोजन कहते हैं।
2. **प्राथमिक विद्यालय**–प्रस्तुत शोध में प्राथमिक विद्यालयों का अर्थ उ0प्र0 राज्य के बरेली जिले में संचालित सरकारी एवं अनुदान प्राप्त विद्यालयों से है। जिनमें कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा उपलब्ध करायी जाती है।
3. **शैक्षिक उपलब्धि**–शोध समस्या में आये शब्द शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ प्राथमिक विद्यालयों में पंजीकृत विद्यार्थियों के विभिन्न विषयों में उनकी शैक्षिक उपलब्धि माना गया है।

8.शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ताओं द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

9.शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के संकलन हेतु डॉ. ए.के. सिंह तथा डॉ. ए.सेन. गुप्ता द्वारा निर्मित सामान्य शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (GACT-SG) का प्रयोग किया गया है।

10.न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में उ प्र. राज्य के बरेली जिले में संचालित सरकारी एवं अनुदान प्राप्त शोध कार्य हेतु चयनित 10 प्राथमिक विद्यालयों में से 100 विद्यार्थियों जिसमें (50 छात्र + 50 छात्रा) का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

11.शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

1.मध्यमान
2.मानक विचलन
3.टी–परीक्षण

12.आँकड़ों का विश्लेशण

मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन निम्न तालिकाओं द्वारा किया गया है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन

तालिका क्रमांक–1

कुल विद्यार्थियों की संख्या	मध्यान्ह भोजन योजना		शैक्षिक उपलब्धि		टी–परीक्षण
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
100	36.8	8.4	29.5	6.0	7.08

$$df = N_1 + N_2\ 2 = 50 + 502 = 98$$

तालिका क्रमांक–1 में 100 विद्यार्थियों के मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली पर प्राप्तांकों का मध्यमान 36.8 एवं मानक विचलन 8.4 है। उक्त सारणी में शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 29.5 तथा मानक विचलन 6.0 है। विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मध्यान्ह भोजन योजना के मध्यमान से कम है तथा मानक विचलन भी शैक्षिक उपलब्धि का मान कम है। गणन द्वारा प्राप्त टी का मान 7.08 है जो कि 0.01 विश्वास के स्तर 2.63 से अधिक है। आंकड़ों के विश्लेश्षण से स्पष्ट है कि मध्यान्ह भोजन योजना एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर सार्थक है अर्थात मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है।

छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन

तालिका क्रमांक–2

कुल विद्यार्थियों की संख्या	मध्यान्ह भोजन योजना		शैक्षिक उपलब्धि		टी–परीक्षण
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
50	38.1	8.6	28.7	7.8	5.94

$$df = N_1 + N_2\ 2 = 25 + 252 = 48$$

तालिका क्रमांक–2 में 50 विद्यार्थियों के मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 38.1 एवं 28.7 हैं तथा मानक विचलन 8.6 एवं 7.2 है। छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त हुए प्राप्तांको का मध्यमान भोजन योजना प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांको से कम है। गणना द्वारा टी–मान का मान 5.94 है जो कि 0.07 विश्वास के स्तर 2.68 से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि मध्यान्ह भोजन योजना का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ रहा है क्योंकि मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर हैं।

छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन

तालिका क्रमांक–3

कुल विद्यार्थियों की संख्या	मध्यान्ह भोजन योजना		शैक्षिक उपलब्धि		टी–परीक्षण
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
50	36.3	7.3	29.8	7.25	4.48

$$df = N_1 + N_2\ 2 = 25 + 252 = 48$$

उपरोक्त तालिका क्रमांक–3 में 50 छात्रों के मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली एवं पर प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान 36.3 तथा मानक विचलन 7.3 है। एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 29.8 एवं मानक विचलन 7.25 है। आंकड़ों के विश्लषण से स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन से कम है। दोनों मध्यमानों पर गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 4.48 है जो कि 0.01 विश्वास के स्तर 2.68 से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक अन्तर नहीं दिखाई पड़ रहा है।

13.निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के परिणामों से मध्यमान भोजन योजना के यथार्थ का चित्रण किया गया, आंकड़ों से ज्ञात हुआ कि मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ रहा है। मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता पौष्टिकता, वितरण व्यवस्था तथा निर्धारित मानकों के अनुसार भोजन प्रदान किये जाने पर भी ध्यान नहीं दिया जाता है। शोध के निष्कर्ष इस प्रकार हैं –

1. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।
2. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक अन्तर नहीं दिखाई दे रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल एच. के. (1985). अनुसंधान विधियां, आगरा भार्गभ प्रकाशन
2. कपिल, एच. के. (1998). सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा विनोद, पुस्तक मन्दिर।
3. कौल, लोकेश (2009). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, तृतीय पुर्नमुद्रण, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस, प्रा. लि.
4. माध्यान्ह भोजन योजना (1995). मानव संसाधन विकास, मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. माध्यान्ह भोजन योजना (2004). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।